SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

उन्नति पत्रिका

(तेरहवाँ संस्करण)

वर्ष-2025

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली

“उन्नति”

(तेरहवाँ संस्करण) वर्ष-2025

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली

संरक्षक	: श्री आर. नरेश, महानिदेशक लेखापरीक्षा
उप संरक्षक	: श्री राकेश सी. सज्जन, निदेशक
वरिष्ठ संपादक	: श्री डी. एम. महांतेश, व. लेखापरीक्षा अधिकारी श्री एस. श्रीकांत, व. लेखापरीक्षा अधिकारी
सह संपादन एवं छायाचित्र	: श्री राजेश प्रियदर्शी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तकनीकी सहयोग	: श्री राजेश प्रियदर्शी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी श्रीमती बी. ब्रिजिता, कनिष्ठ अनुवादक

शुभकामना संदेश

वर्ष 2025 में 'उन्नति' पत्रिका के तेरहवाँ संस्करण को प्रकाशित करने में मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका अधिकारीयों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि, अभिव्यक्ति-कौशल तथा हिंदी भाषा के प्रति समर्पण को उजागर करने वाला महत्वपूर्ण मंच है।हिंदी के प्रयोग और प्रसार को प्रोत्साहन देने में इस पत्रिका की भूमिका सराहनीय है। इस कार्यालय ने राजभाषा अनुभाग द्वारा निर्धारित सभी लक्ष्यों को सुचारु रुप से प्राप्त करने का प्रयास किया है। इस कार्यालय के अधिकारीयों एवं कर्मचारियों ने हिन्दी कार्यान्वयन को महत्व दिया एवं अपने लेखों को प्रस्तुत किया और हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में भाग लिया। आशा है कि इस पत्रिका के विमोचन से समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी प्रेरित होंगे और 'उन्नति' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त होगा।

र नरेश

(आर. नरेश)

महानिदेशक लेखापरीक्षा

निदेशक की कलम से।।।।।।।।।।।

'उन्नति' पत्रिका का विमोचन हिन्दी भाषा को राष्ट्र्व्यापी बनाने की ओर एक सराहनीय कदम है। हिन्दी भाषा एक ऐसा माध्यम है, जो पूरे देश को एक कड़ी में पिरो सकती है। हमारे कार्यालय के हर एक कर्मचारी एवं अधिकारी, जिन्होंने अपनी मेहनत और लगन से इस पत्रिका को सफल बनाने में अपना योगदान दिया है, उन सबको मैं बधाई देता हूँ। क्योंकि यह पत्रिका एक सामूहिक प्रयास का ही परिणाम है। मैं अपेक्षा करता हूँ कि आने वाले समय में भी सभी अधिकारी एवं कर्मचारी इसी उत्साह के साथ हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देते रहेंगे।

मैं आशा करता हूँ, कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'उन्नति' पत्रिका का तेरहवाँ संस्करण सफल हो।

(राकेश सी सज्जन)
निदेशक

संपादकीय ।।।।।।।।

यह हमारे लिए बहुत ही हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'उन्नति' का तेरहवाँ संस्करण प्रकाशित हो रहा है। इससे हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने लेखों द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने का मौका मिलता है। इस पत्रिका को सफल बनाने में हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अहम भूमिका रही है। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका सभी के लिए उपयोगी एवं प्रेरणादायी सिद्ध होगी।'उन्नति' पत्रिका के तेरहवाँ संस्करण की सफलता की कामना करता हूँ।

(डी. एम. महांतेश)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

नोट – पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबन्धित लेखकों के हैं। संपादक मण्डल एवं कार्यालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं के संबंध में किसी भी विवाद का उत्तरदायित्व भी रचनाकारों का ही होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.सं	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं
1	राखी के तीन दौर – बदलते रिश्तों का सफ़र	संजीत के. एम झा	7-9
2	ईमानदारी का इनाम	अभिषेक कुमार	10
3	पापा की परी	राम राघव	11
4	मैसूर – धरोहरों और स्वाद का शहर	अनुज्ञा गुप्ता	12
5	हर कदम ध्यान से	एम.मनु	13
6	कर्नाटक राज्य का शहर " गदग" एक परिचय	राजेश प्रियदर्शी	14
7	एक टोकरी-भर मिट्टी	टी. वेंकट रत्नय्या	15
8	चालाक लोमड़ी को सबक	विपिन कुमार	16
9	सच्चे भक्त की कहानी	पीयूष पपनेजा	17
10	खुश रहने का रहस्य	बी.ब्रिजिता	18-19
11	गोकक जलप्रपात- प्रकृति, इतिहास और विरासत	परमेश गौतम	20
12	गीता सार	शुभम गौड़	21-22
13	चाचा के चार आम और हुदिया की चाल	राम राघव	23-25
14	बदलती नज़रिये से जीवन	अनुज्ञा गुप्ता	26
15	आज की नारी	विनोद कुमार मीना	27
16	गोकर्ण और मुरुदेश्वर की यात्रा	अभिनव कुमार गुप्ता	28
17	डिजिटल युग में स्क्रीन का अति-उपयोग- एक बढ़ती सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती	राजकिरण पुडकलकट्टी	29-30
18	योग और ध्यान: तनावमुक्त जीवन की कुंजी	उदयकुमार बी मनकट्टी	31
19	तुलसीदास: जीवन और कृतित्व	पम्पा बिस्वास	32

राखी के तीन दौर – बदलते रिश्तों का सफ़र

भाई-बहन का रिश्ता सच्चे दोस्ती और प्रेम से बना होता है। बचपन में एक-दूसरे के साथ हर ख़ुशी और ग़म को साझा करना, यही इस रिश्ते की खासियत है। भाई अपनी बहन को हमेशा अपनी सुरक्षा का वचन देता है, और बहन उसे अपना दिल और आशीर्वाद। झगड़े होते हैं, लेकिन प्यार हमेशा गहरा रहता है। यह रिश्ता जीवनभर का साथ है, जो कभी टूटता नहीं, सिर्फ़ और मजबूत होता है।

कोलकाता में ऐसे ही एक भाई-बहन रहते थे, जिनका नाम था राम और गौरी। दोनों का रिश्ता बेहद प्यारा और अनमोल था। राखी के दिन गौरी हर बार अपने भाई की कलाई पर रंगीन धागा बांधती, और राम उसे अपनी सुरक्षा और साथ का वचन देता। उनका रिश्ता सच्चे स्नेह और विश्वास से गढ़ा था, जो हर परिस्थिति में कभी कमजोर नहीं हुआ।

पहला दौर – अपनापन और हाथों का स्पर्श

राम और गौरी का रिश्ता बचपन से ही बहुत खास था। दोनों के बीच उम्र का फासला इतना कम था कि कभी भी कोई अकेलापन महसूस नहीं होता था। राम, जो हमेशा अपनी बहन के साथ खेलने और पढ़ाई में मदद करने के लिए तैयार रहता था। राखी का त्योहार उनके लिए बस एक दिन नहीं, बल्कि एक पूरा उत्सव होता था।

राखी के दिन, सुबह-सुबह, घर में मम्मी-पापा के साथ मिठाइयाँ तैयार होतीं, और गौरी एक खूबसूरत राखी की थाली सजाती। उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक होती, जैसे किसी खास उपहार का मिलना हो।

उस दिन पापा भी अपनी बहन के घर जाते थे। माँ मामा का इंतज़ार करती। गौरी और राम, दोनों उस दिन को लेकर बेहद खुश होते थे। राम अपनी बहन के लिए तोहफे लाता, और गौरी राखी बांधते समय उसे अपना प्यार और आशीर्वाद देती।

राखी के दिन, एक अद्भुत माहौल बन जाता था—घर में हंसी-खुशी का माहौल, मिठाइयों की खुशबू, और प्यार की एक गहरी लहर। यह बस एक रस्म नहीं, बल्कि भाई-बहन के रिश्ते को और भी मजबूत करने का अवसर था।

यह पहला दौर था जिसमें राखी का मतलब केवल एक धागा नहीं, बल्कि बहन के अपने हाथों का स्पर्श, स्नेह और आशीर्वाद था। भाई के माथे पर तिलक लगाकर, अपनी आंखों में प्यार और दुआओं के साथ राखी बांधना ही इस त्योहार का असली आनंद था। यह सिर्फ एक रस्म नहीं, बल्कि भावनाओं की गहरी अभिव्यक्ति थी।

दूसरा दौर – दूरी और डाक का प्यार

समय के साथ दोनों की राहें बदल गईं। राम को एक सरकारी नौकरी मिल गई थी, और उसे अब बंगलौर में अपने करियर को संवारने के लिए जाना पड़ा। गौरी, जो हमेशा राम के पास रहती थी, अब अकेली हो गई थी। ये बदलाव दोनों के लिए ही मुश्किल था।

राखी का त्योहार आया। गौरी ने काफ़ी समय पहले से राखी की एक खूबसूरत डिज़ाइन चुनी और उसे अपने हाथों से बांधने के लिए तैयार किया। फिर उसने सोचा, "अब राम को कैसे राखी भेजूँ?" उसके पास सिर्फ एक रास्ता था – डाक।

उसने राखी को बहुत प्यार से पैक किया, साथ में अपनी भावनाओं से भरी एक चिट्ठी भी लिखी। चिट्ठी में उसने लिखा, "भाई, तुम्हारे बिना त्योहार कभी पूरा नहीं लगता। लेकिन मैं जानती हूँ कि दूर रहकर भी तुम हमेशा मेरे पास हो। तुम मेरी दुनिया हो, और हमेशा रहोगे।"

डाक के जरिए राखी भेजने के बाद गौरी ने हर दिन उस दिन का इंतजार किया जब राम को उसका प्यार भरा पैकेट मिलेगा। बंगलौर में भी राम को वह डाक का इंतजार था। और जब राखी उसके पास आई, तो उस लिफाफे में छिपी उस राखी की खुशबू और प्यार ने राम को बहुत शांति दी। वह तुरंत फोन करके अपनी बहन को धन्यवाद कहा, और दोनों ने एक-दूसरे से अपनी यादें साझा की।

यह दूसरा दौर था जिसमें समय के साथ परिस्थितियां बदलीं। पढ़ाई, नौकरी या विवाह के कारण भाई-बहन अलग-अलग शहरों में रहने लगे। ऐसे में बहनें डाक के माध्यम से राखी भेजने लगीं। यह दौर भी बहुत भावुक था, क्योंकि बहन खुद बाजार जाकर राखी चुनती, उसे अपने हाथों से लिफ़ाफ़े में पैक करती और डाकखाने जाकर भेजती थी। डाक से राखी पहुंचने का इंतजार, भाई के लिए एक अलग ही उत्साह लाता था। लिफ़ाफ़ा खोलते समय उसमें से उठती हल्की-सी सुगंध, कागज में लिपटा स्नेह और बचपन की यादें, इस छोटे से पैकेट को अमूल्य बना देती थीं।

तीसरा दौर – ऑनलाइन राखी और बदलती संवेदनाएं

समय के साथ दोनों ने अपने-अपने जीवन में काफी बदलाव देखे। राम की नौकरी का बोझ बढ़ गया था, जबकि गौरी भी अब एक नामी कंपनी में काम करती थी। दोनों की ज़िंदगी में इतनी उलझनें आ गईं कि अब एक-दूसरे से बात करने का समय भी कम हो गया था। लेकिन इस बार राखी फिर से आई – पूरी तरह से डिजिटल!

गौरी ने सोचा, "इस बार क्यों न हम तकनीक का सहारा लें?" उसने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर एक खास राखी ऑर्डर की, जो राम के पसंदीदा रंगों में थी, और साथ में एक ई-कार्ड भेजा, जिस पर उसकी भावनाएँ लिखी थीं।

वहीं राम, जो अब बंगलौर में अकेला रहता था, ने सोचा कि यह सच्चा प्यार सिर्फ ऑनलाइन संदेश से व्यक्त करना थोड़ा अजीब सा लगेगा। लेकिन फिर उसने भी अपनी बहन के लिए एक वीडियो कॉल करने का फैसला किया, ताकि उसकी मुस्कान और प्यार दूर से ही सही, लेकिन महसूस हो सके।

वीडियो कॉल पर दोनों ने एक-दूसरे से खूब बातें की, और हालाँकि इस बार राखी का त्यौहार पहले जैसा नहीं था, फिर भी दोनों के दिलों में वही पुरानी गर्मी और प्यार था।

यह तीसरा दौर था जिसमें आज के दौर में तकनीक ने हमारे जीवन को बेहद आसान बना दिया है। अब बहन को न बाजार जाने की जरूरत है, न डाकखाने जाने की। वह मोबाइल या कंप्यूटर पर कुछ क्लिक करके ऑनलाइन राखी ऑर्डर कर देती है, जो सीधे भाई के पते पर पहुंच जाती है। सुविधाजनक होने के बावजूद, इसमें वह अपनापन और व्यक्तिगत स्पर्श कहीं खो सा जाता है। न हाथों की महक, न चुने हुए धागे का एहसास, बस एक डिलीवरी बॉक्स और उसके भीतर राखी।

तीनों दौर अपने-अपने समय में खास हैं। पहले दौर में अपनापन था, दूसरे में दूरी के बावजूद भावनाओं की गर्माहट, और तीसरे में तकनीक की सुविधा। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि राखी का असली मतलब केवल धागा भेजना या बांधना नहीं, बल्कि भाई-बहन के रिश्ते में प्रेम, विश्वास और सुरक्षा का वचन निभाना है। चाहे तरीका कोई भी हो, अगर भावनाएं सच्ची हैं तो राखी हमेशा दिलों को जोड़ती रहेगी।

संजीत के. एम झा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ईमानदारी का इनाम

एक गाँव में रामु नाम का गरीब लड़का रहता था। वह बहुत ईमानदार और मेहनती था। रोज़ वह जंगल से लकड़ी काटकर बाज़ार में बेचता और उसी से अपने परिवार का पेट पालता था।

एक दिन रामु नदी किनारे पेड़ काट रहा था। अचानक उसकी कुल्हाड़ी फिसलकर नदी में गिर गई। रामु बहुत परेशान हुआ क्योंकि उसके पास दूसरी कुल्हाड़ी नहीं थी। वह उदास होकर नदी के पास बैठकर रोने लगा।

तभी भगवान प्रकट हुए और बोले, "रामु, तुम क्यों रो रहे हो?" रामु ने सच्चाई बताई। भगवान ने नदी में हाथ डालकर सोने की कुल्हाड़ी निकाली और पूछा, "क्या यह तुम्हारी है?" रामु ने कहा, "नहीं, यह मेरी नहीं है।" फिर भगवान ने चाँदी की कुल्हाड़ी निकाली, रामु ने फिर मना कर दिया। आखिर में भगवान ने उसकी लोहे की कुल्हाड़ी निकाली। रामु खुशी से बोला, "हाँ, यही मेरी कुल्हाड़ी है।"

भगवान रामु की ईमानदारी से प्रसन्न हुए और उसे तीनों कुल्हाड़ियाँ उपहार में दे दीं। रामु बहुत खुश हुआ और गाँव में उसकी ईमानदारी की चर्चा होने लगी।

सीख:

ईमानदारी हमेशा फल देती है, चाहे परिस्थिति कैसी भी हो। सच्चाई और ईमानदारी का रास्ता चुनने वालों को जीवन में अवश्य सफलता और सम्मान मिलता है।

अभिषेक कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

पापा की परी

"पापा की परी" अब हो गई है बड़ी
पहले चलती थी वो घुटनों के बल
अब चलने लगी है वो हो के खड़ी
उम्र बचपन का थोड़ा सयाना हो गया
पहले ठुमक थी अब दौड़कर आना हो गया
देखते देखते ही ....
पापा की परी ......

मां पापा की प्यारी घर की उजियारी
अब तो हर बात में दादा दादी से यारी
नाना नानी भी बरबस कह पड़ते हैं न्यारी
छोटी उमर में बात करती है भारी
इसकी बातों से कदाचित मुझे भी लगा
कि .... पापा की परी....

मम्मा लेट जाओ जरा
दर्द कहीं भी हो बताओ जरा
सर में है या वदन में कहीं
थोड़ा ही सही पर दबा दूं जरा
कभी कभी पूछ बैठती है वो
घर के कामों में हाथ बटा दूं जरा
चाहने वाले अक्सर ये सब देखकर
मन से अनायास ही कह पड़ते हैं
कि .... पापा की परी अब....

अभी उम्र इसका हुआ है कहां
कुछ समय पहले तक तो वो गोदी में थी
अब अचानक उतरकर जाएगी कहां
गोद आंगन की शिक्षा जो भरसक हुई
वहीं पुण्य प्रथमा का दर्शन हुई
चलो अब मैं बिटिया को लेके चलूं
अब मैं नामांकन इनका स्कूल में करूं
पड़ोसी चाचा चाची भी देखकर यही कह पड़ें
कि ....
पापा की परी....
सुनो पापा थोड़ा ध्यान से सुनो
बैग ड्रेस का कुछ तो करो
कोई दिक्कत तो दूर आज ही करो
कल मैं बाबा के संग पहन स्कूल के रंग
बाय मम्मा को कहके चली जाऊंगी
कुछ गिनती और क ख वहीं सीखकर
कर जलपान वापस चली आऊंगी
आप ड्यूटी अपना करो पूर्ण मन
इधर की चिंता न करना न करना भरम
पहला दिन है भले पर मैं नहीं रोऊंगी
अपनी ममता की माया से नहीं छाऊंगी
क्लास मिस भी अचानक बोल ही उठी
कि .... पापा की परी....

राम राघव
लेखापरीक्षक

मैसूर – धरोहरों और स्वाद का शहर

यात्राएँ हमेशा मन को नई ऊर्जा और ताजगी से भर देती हैं। हाल ही में मुझे कर्नाटक राज्य के ऐतिहासिक शहर मैसूर जाने का अवसर मिला। यह यात्रा मेरे लिए न केवल मनोरंजन का माध्यम रही, बल्कि संस्कृति, इतिहास और प्रकृति के अनोखे संगम को करीब से जानने का अनुभव भी रही।

मैसूर को "महलों का शहर" कहा जाता है। यहाँ का मैसूर पैलेस देखने लायक है। इसके शिल्प और भव्यता को देखकर ऐसा लगता है मानो हम किसी दूसरी ही दुनिया में पहुँच गए हों। शाम को जब यह महल रोशनी से जगमगाता है तो ऐसा लगता है मानो इतिहास अपनी कहानियाँ खुद बयां कर रहा हो।

मैसूर रेशम की साड़ियों और चंदन की खुशबू के लिए भी प्रसिद्ध है। स्थानीय बाजारों में घूमते समय मैंने वहाँ की पारंपरिक कला और हस्तशिल्प को नज़दीक से देखा। खासकर लकड़ी पर की गई बारीक नक़्क़ाशी और रंगीन पेंटिंग्स मुझे बहुत प्रभावित कर गईं।

शहर के ऊँचे पहाड़ पर स्थित चामुंडेश्वरी मंदिर में दर्शन करने का अवसर भी मिला। वहाँ की शांति और आध्यात्मिक वातावरण ने मन को गहराई तक छू लिया। ऊपर से दिखाई देने वाला मैसूर शहर का दृश्य वाकई अद्भुत था। इतिहास और संस्कृति के साथ-साथ मैसूर की प्राकृतिक सुंदरता भी अद्भुत है। मैंने ब्रिंदावन गार्डन में समय बिताया, जहाँ संगीतमय फव्वारे की छटा ने शाम को बेहद यादगार बना दिया।

यात्रा अधूरी रहती अगर मैंने वहाँ के स्थानीय व्यंजन न चखे होते। मैसूर मसाला डोसा, इडली-सांभर और मैसूर पाक का स्वाद अब तक ज़ुबान पर बसा है। हर व्यंजन में वहाँ की परंपरा और आत्मीयता झलकती है।मैसूर की खासियत सिर्फ इसकी इमारतें या व्यंजन ही नहीं हैं, बल्कि इसकी वाइब है। सड़कों, बाजारों और मंदिरों में चलते हुए सचमुच लगता है कि यह शहर अपने इतिहास की कहानियाँ कानों में धीरे-धीरे फुसफुसा रहा हो।

यह यात्रा मेरे लिए केवल दर्शनीय स्थलों तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने मुझे यह सिखाया कि भारत के हर हिस्से में कुछ अनोखा और विशेष छुपा है। मैसूर की यह यात्रा मेरे जीवन की अविस्मरणीय यादों में शामिल हो गई है। यह शहर हर उस व्यक्ति को जरूर देखना चाहिए जो संस्कृति, इतिहास और प्रकृति का संगम एक साथ अनुभव करना चाहता हो।

अनुज्ञा गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हर कदम ध्यान से

हर कदम तू जागी रहे|

हर कदम पर तेरा ध्यान रहे|

रोज़ कुछ न कुछ सामना करते रहे|

हजारों मुश्किले आती रहे|

कोई तुझे समझने की कोशिश न करता रहे|

तुझ पर किसी का ध्यान न रहे|

अभाव में तेरे सब शिथिल रहे|

तू सब में एकता भरती रहे|

दूसरों के लिए अपना सपना छोड़ती रहे|

उनका सपना साक्षात करती रहे|

अपने सुखों को छोड परो के दुखों को अपनी रहे|

जब जिंदगी को मुड़कर तू देखती रहे|

केवल स्वयं के लिए कुछ बाकी न रहे|

तू खुद अपने सपने को पूरा करती रहे|

अपने समय को तू बनाती रहे|

अपनी ज़िदगी के लिए तू लगातार मेहनत करती रहे|

अपनी मंज़िल को प्राप्त करती रहे जिसे पाकर तू झूमती रहे|

एम.मनु

लेखापरीक्षक

कर्नाटक राज्य का शहर " गदग " एक परिचय

गदग भारत के कर्नाटक राज्य का एक शहर है। 24 अगस्त, 1997 को 'गदग ' एक नए ज़िले के रूप में उभरा। कला, साहित्य, संस्कृति, आध्यात्मिकता और उद्योग के क्षेत्र में गदग की अपनी एक प्राचीन विरासत रही है। यह हरियाली से भरपूर एक पर्यटन स्थल भी है और कई प्रकृति प्रेमी यहाँ घूमने आते हैं। इसकी उत्तरी सीमा पर मलप्रभा और दक्षिणी सीमा पर तुंगभद्रा बहती है। इसके अलावा, बेन्नेहॉल, रोन के पास मलप्रभा से मिलती है। पूरे ज़िले में काली मिट्टी की प्रधानता है, लेकिन कुछ भागों में रेत वाली लाल मिट्टी भी पाई जाती है। यहाँ का तापमान मध्यम है, मौसम सुहावना और स्वास्थ्यवर्धक है।

गदग का नाम सुनते ही नारायणप्पा का नाम मन में आता है, जिन्हें कुमारव्यास के नाम से जाना जाता है और उन्होंने कर्नाटक भारत कथामंजरी की रचना की थी। यह कन्नड़ में रचित एक उत्कृष्ट कृति है। नारायणप्पा का जन्म पास के कोलीवाड़ा गाँव में हुआ था। उन्होंने अपने आराध्य देव भगवान वीर नारायण के समक्ष बैठकर अपनी रचना की थी। वीर नारायण और त्रिकुटेश्वर मंदिर धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व के स्थान हैं। अंधे गायक पंडित गणयोगी पंचाक्षरी गवयी गदग के ही थे। उनका संगीत विद्यालय (वीरेश्वर पुण्याश्रम) प्रसिद्ध है। हिंदू धर्म के वीरशैव संप्रदाय का तोंतदार्य मठ गदग और उसके आसपास कई शैक्षणिक और साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न है।

गदग के बारे में एक किंवदंती है कि अगर आप शहर में पत्थर फेंकेंगे तो वह या तो किसी प्रिंटिंग प्रेस पर या फिर किसी हथकरघे पर गिरेगा। गदग में कई प्रिंटिंग प्रेस हैं जिनमें होम्बाली ब्रदर्स और शबदी मठ प्रिंटिंग प्रेस शामिल हैं। गदग से सटा बेतागेरी शहर हथकरघों के लिए प्रसिद्ध है। गदग उत्तर कर्नाटक में हिंदुस्तानी संगीत का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है और यह हिंदुस्तानी गायक भारत रत्न से सम्मानित पंडित भीमसेन जोशी का घर है। आधुनिक कन्नड़ साहित्य और स्वतंत्रता सेनानी श्री हुइलगोल नारायण राव, पंडित पुट्टराज गवई, हिंदुस्तानी शास्त्रीय परंपरा के रत्नों में से एक और हमारे जाने-माने क्रिकेटर सुनील जोशी, आदि ने भी इस क्षेत्र में योगदान दिया है।

यह लेख इंटरनेट पर उपलब्ध साधनों से एकत्र की गई हैं।

राजेश प्रियदर्शी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक टोकरी-भर मिट्टी

किसी श्रीमान ज़मींदार के महल के पास एक ग़रीब अनाथ विधवा की झोंपड़ी थी। ज़मींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई, विधवा से बहुतेरा कहा कि अपनी झोंपड़ी हटा ले, पर वह तो कई ज़माने से वहीं बसी थी; उसका प्रिय पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोंपड़ी में मर गया था। पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी। अब यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी। जब उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो दु:ख के मारे फूट-फूट कर रोने लगती थी और जबसे उसने अपने श्रीमान पड़ोसी की इच्छा का हाल सुना, तबसे वह मृतप्राय हो गई थी। उस झोंपड़ी में उसका मन लग गया था कि बिना मरे वहाँ से निकलना नहीं चाहती थी। श्रीमान के सब प्रयत्न निष्फल हुए, तब वे अपनी ज़मींदारी चाल चलने लगे। बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना क़ब्ज़ा करा लिया और विधवा को वहाँ से निकाल दिया। बेचारी अनाथ तो थी ही, पास-पड़ोस में कहीं जाकर रहने लगी।

एक दिन श्रीमान उस झोंपड़ी के आसपास टहल रहे थे और लोगों को काम बतला रहे थे तब वह विधवा हाथ में एक टोकरी लेकर वहाँ पहुँची। श्रीमान ने उसको देखते ही अपने नौकरों से कहा कि इसे यहाँ से हटा दो। पर वह गिड़गिड़ाकर बोली, "महाराज, अब तो यह झोंपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।" ज़मींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा, "जब से यह झोंपड़ी छूटी है, तब से मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है। मैंने बहुत कुछ समझाया पर वह एक नहीं मानती। यही कहा करती है कि अपने घर चल। वहीं रोटी खाऊँगी। अब मैंने यह सोचा कि इस झोंपड़ी में से एक टोकरी-भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हाा बनाकर रोटी पकाऊँगी। इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी। महाराज कृपा करके आज्ञा दीजिए तो इस टोकरी में मिट्टी ले आऊँ!" श्रीमान ने आज्ञा दे दी।

विधवा झोंपड़ी के भीतर गई। वहाँ जाते ही उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। अपने आंतरिक दु:ख को किसी तरह सँभाल कर उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और हाथ से उठाकर बाहर ले आई। फिर हाथ जोड़कर श्रीमान से प्रार्थना करने लगी, "महाराज, कृपा करके इस टोकरी को ज़रा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर ले जासकूँ।" ज़मींदार साहब पहले तो बहुत नाराज़ हुए। पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके मन में कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर वे स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े। ज्यों ही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्यों ही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है। फिर तो उन्होंने अपनी सब ताक़त लगाकर टोकरी को उठाना चाहा, पर जिस स्थान पर टोकरी रखी थी, वहाँ से वह एक हाथ भी ऊँची न हुई। वह लज्जित होकर कहने लगे, "नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।"

यह सुनकर विधवा ने कहा, "महाराज, नाराज़ न हों, आपसे एक टोकरी-भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप कैसे उठा सकेंगे? आप ही इस बात पर विचार कीजिए।

ज़मींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे पर विधवा के उपर्युक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गईं। कृतकर्म का पश्चा्ताप कर उन्होंने विधवा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापिस दे दी।

टी. वेंकट रत्नय्या

लेखापरीक्षक

चालाक लोमड़ी को सबक

एक गधा घास चर रहा था। तभी उसने देखा कि एक लोमड़ी उसकी ओर आ रही थी। वह लोमड़ी का स्वभाव जानता था। वह जानता था कि लोमड़ी बहुत चालाक है। इधर लोमड़ी भी यह जानती थी कि गधे बहुत ताकतवर होते हैं। इसलिए वह भी गधे को बातों में उलझाने का तरीका सोच रही थी।

गधा लोमड़ी को देखकर लँगड़ा-लँगड़ाकर चलने लगा। लोमड़ी ने पूछा कि उसे क्या हुआ है? तब गधे ने कहा, 'ऐसा लगता है कि मेरे पैर में काँटा चुभ गया है। इसीलिए बहुत दर्द हो रहा है और चलने में मुश्किल भी हो रही है।'

लोमड़ी ने कहा, 'मैंने एक डॉक्टर से इलाज करना सीखा है। तुम्हें काफी तकलीफ हो रही होगी। लाओ मुझे दिखाओं अपना पैर।'

ऐसा कहकर लोमड़ी चालाकी से गधे को पैर से पकड़ने के लिए झुकी। उसने सोचा कि अगर उसने गधे को एक बार गिरा दिया तो फिर उस पर काबू पाना आसान हो जाएगा।

लेकिन गधा उससे ज्यादा समझदार था। जैसे ही लोमड़ी ने उसका पैर पकड़ना चाहा, गधे ने उसे एक जोरदार लात मारी। लोमड़ी हवा में उड़कर दूर जा गिरी। अब गधे की जगह बेचारी लोमड़ी लँगड़ा रही थी और सोच रही थी- मेरी आदत है चालाकी करना और गधे की आदत है लात मारना। दोनों अपनी-अपनी आदत से मजबूर हैं।

"ऐसी आदतें या चालाकियाँ जो दूसरों को तकलीफ़ पहुँचाएँ ...... कभी मत सीखना"

विपिन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सच्चे भक्त की कहानी

एक बार की बात है, भगवान् के एक सच्चे भक्त थे। वह बहुत गरीब थे लेकिन भगवान में उनका विश्वास बहुत मजबूत था। वह हर दिन मंदिर जाते थे और भगवान की पूजा करते थे । एक दिन वह मंदिर से घर जा रहे थे कि रास्ते में कुछ डाकू मिल गए । भक्त के पास कुछ सामान और भगवान की कीमती मूर्ति थी। डाकुओं ने भक्त से उनसे सारा सामान माँगा। भक्त ने डाकू को अपना सामान दे दिया, लेकिन उसने भगवान की मूर्ति नहीं दी। डाकुओं के दबाव डालने पर उहोने कहा-" मैं भगवान का भक्त हूं, मैं अपना सामान और अपनी जान दे सकता हूं, लेकिन मैं भगवान को नहीं छोड़ सकता ।"

डाकू भक्त की बात सुनकर हैरान रह गए, उन्होंने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा था जो भगवान का इतना बड़ा भक्त हो। डाकू ने भक्त से कहा-" मैंने अपनी जिन्दगी में आपके जैसा भक्त नहीं देखा जो भगवान को देने से अच्छा अपनी जान देना उचित समझता हो। मैं आपको कुछ पैसे दे रहा हूं आप इन पैसों से अपना जीवन अच्छे से जी सकते हो।" भक्त ने डाकू के पैसे लेने से मना कर दिया. उसने कहा, "मुझे पैसों की जरूरत नहीं है। मुझे भगवान पर भरोसा है। वह मुझे सब कुछ देगा।" डाकू भक्त की बात सुनकर और भी हैरान रह गया। उसने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा था जो भगवान् का इतना बड़ा भक्त और इतना इमानदार हो ।

डाकू ने भक्त से आशीर्वाद लिया और वहां से चला गया। भक्त घर गया और भगवान की पूजा करने लगा। वह भगवान को धन्यवाद दे रहा था कि उसने डाकू से उसे बचाया था। भक्त को पता था कि भगवान कभी भी उसका सांथ नहीं छोड़ेंगे। भक्त भगवान की कृपा और अपनी मेहनत से एक दिन बड़ा आदमी बन गया ।

शिक्षा - सच्चे भक्त की कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा भगवान पर भरोसा रखना चाहिए। चाहे कितनी भी मुश्किलें आ जाएं, हमें कभी भी भगवान पर भरोसा नहीं छोड़ना चाहिए ।

पीयूष पपनेजा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

!! खुश रहने का रहस्य !!

~~~~~~~~~

बहुत समय पहले की बात है, एक गाँव में एक महात्मा रहते थे। आसपास के गाँवों के लोग अपनी समस्याओं और परेशानियों के समाधान के लिए महात्मा के पास जाते थे। और संत उनकी समस्याओं, परेशानियों को दूर करके उनका मार्गदर्शन करते थे। एक दिन एक व्यक्ति ने महात्मा से पूछा – गुरुवर, संसार में खुश रहने का रहस्य क्या है?

महात्मा ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ जंगल में चलो, मैं तुम्हें खुश रहने का रहस्य बताता हूँ। उसके बाद महात्मा और वह व्यक्ति जंगल की तरफ चल दिए। रास्ते में चलते हुए महात्मा ने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उस व्यक्ति को देते हुए कहा कि इसे पकड़ो और चलो। उस व्यक्ति ने वह पत्थर लिया और वह महात्मा के साथ साथ चलने लगा।

कुछ देर बाद उस व्यक्ति के हाथ में दर्द होने लगा लेकिन वह चुप रहा और चलता रहा। जब चलते चलते बहुत समय बीत गया और उस व्यक्ति से दर्द सहा नहीं गया तो उसने महात्मा से कहा कि उसे बहुत दर्द हो रहा है। महात्मा ने कहा कि इस पत्थर को नीचे रख दो। पत्थर को नीचे रखते ही उस व्यक्ति को बड़ी राहत मिली।

तब महात्मा ने उससे पूछा – जब तुमने पत्थर को अपने हाथ में उठा रखा था तब तुम्हें कैसा लग रहा था। उस व्यक्ति ने कहा – शुरू में दर्द कम था तो मेरा ध्यान आप पर ज्यादा था, पत्थर पर कम था। लेकिन जैसे जैसे दर्द बढ़ता गया मेरा ध्यान आप पर से कम होने लगा और पत्थर पर ज्यादा होने लगा और एक समय मेरा पूरा ध्यान पत्थर पर आ गया और मैं इससे अलग कुछ नहीं सोच पा रहा था।

तब महात्मा ने उससे दोबारा पूछा – जब तुमने पत्थर को नीचे रखा तब तुम्हें कैसा महसूस हुआ।इस पर उस व्यक्ति ने कहा – पत्थर नीचे रखते ही मुझे बहुत राहत महसूस हुई और ख़ुशी भी महसूस हुई।
तब महात्मा ने कहा कि यही है खुश रहने का रहस्य! इस पर वह व्यक्ति बोला – गुरुवर, मैं कुछ समझा नहीं।

तब महात्मा ने उसे समझाते हुए कहा – जिस तरह इस पत्थर को थोड़ी देर हाथ में उठाने पर थोड़ा सा दर्द होता है, थोड़ी और ज्यादा देर उठाने पर थोड़ा और ज्यादा दर्द होता है और अगर हम इसे बहुत देर तक उठाये रखेंगे तो दर्द भी बढ़ता जायेगा। उसी तरह हम दुखों के बोझ को जितने ज्यादा समय तक उठाये रखेंगे हम उतने ही दुखी और निराश रहेंगे। यह हम पर निर्भर करता है कि हम दुखों के बोझ को थोड़ी सी देर उठाये रखते हैं या उसे ज़िंदगी भर उठाये रहते हैं।

इसलिए अगर तुम खुश रहना चाहते हो तो अपने दुःख रुपी पत्थर को जल्दी से जल्दी नीचे रखना सीख लो और अगर संभव हो तो उसे उठाओ ही नहीं।
~~~~~~~~~

शिक्षा: -

यदि हमने अपने दुःख रुपी पत्थर को उठा रखा है तो शुरू शुरू में हमारा ध्यान अपने लक्ष्यों पर ज्यादा तथा दुखों पर कम होगा। लेकिन अगर हमने अपने दुःख रुपी पत्थर को लम्बे समय से उठा रखा है तो हमारा ध्यान अपने लक्ष्यों से हटकर हमारे दुखों पर आ जायेगा। और तब हम अपने दुखों के अलावा कुछ नहीं सोच पाएंगे और अपने दुखों में ही डूबकर परेशान होते रहेंगे और कभी भी खुश नहीं रह पाएंगे।

इसलिए अगर आपने भी कोई दुःख रुपी पत्थर उठा रखा है तो उसे जल्दी से जल्दी नीचे रखिये मतलब अपने दुखों को, तनाव को अपने दिलों दिमाग से निकाल फेंकिए और खुश रहिए तथा लक्ष्य को प्राप्त कीजिये..!!

सदैव प्रसन्न रहिये - जो प्राप्त है, पर्याप्त है।

जिसका मन मस्त है - उसके पास समस्त है।।

बी.ब्रिजिता
कनिष्ठ अनुवादक

गोकक जलप्रपात- प्रकृति, इतिहास और विरासत

गोकक जलप्रपात, जो कर्नाटक के बेलगावी जिले में घटप्रभा नदी पर स्थित है, एक अत्यंत आकर्षक प्राकृतिक अजूबा है। यह नदी 52 मीटर (171 फीट) की ऊँचाई से बलुआ पत्थर की चट्टान से गिरकर एक खड़ी घाटी में समा जाती है, जिससे एक भव्य दृश्य उत्पन्न होता है जहाँ झरना और चट्टानों का सुंदर मेल देखने को मिलता है। जलप्रपात का चौड़ा, घोड़े की नाल के आकार का शीर्ष और इसकी प्रबल धारा इसे दृश्यात्मक रूप से अत्यंत प्रभावशाली और फोटोजेनिक बनाती है।

गोकक जलप्रपात की सबसे खास बात इसकी सस्पेंशन ब्रिज है, जो लगभग 200 मीटर लंबी है और चट्टान के स्तर से लगभग 14 मीटर ऊपर स्थित है। यह पुल आगंतुकों को रोमांचक दृश्य प्रस्तुत करता है और यहाँ से पूरे जलप्रपात का शानदार नजारा देखा जा सकता है। प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ, गोकक जलप्रपात का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी है। यह क्षेत्र हाइड्रोइलेक्ट्रिक ऊर्जा उत्पादन के शुरुआती स्थलों में से एक था, जहाँ 19वीं सदी के अंत से ही छोटे पैमाने पर बिजली उत्पादन शुरू हुआ था। इसके आसपास प्राचीन चालुक्य शैली के मंदिर भी हैं, जिनमें महालिंगेश्वर मंदिर प्रमुख है, जो इस क्षेत्र की समृद्ध स्थापत्य विरासत को दर्शाता है।

गोकक जलप्रपात गोकक शहर के निकट होने के कारण एक दिन की यात्रा या सप्ताहांत भ्रमण के लिए आसानी से पहुँचा जा सकता है। यह स्थान प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक गहराई और साहसिक अनुभवों का अनूठा संगम प्रदान करता है, जहाँ आगंतुक फोटोग्राफी, अन्वेषण और सांस्कृतिक अनुभव का आनंद ले सकते हैं। चाहे आप प्रकृति प्रेमी हों, इतिहास के शौकीन हों या बस एक सुंदर जगह की तलाश में हों, गोकक जलप्रपात आपके लिए एक यादगार और समृद्ध यात्रा अनुभव प्रस्तुत करता है।

यात्रा का सर्वोत्तम समय और सुझाव: मानसून का मौसम, विशेषकर जून से सितंबर तक, यात्रा के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है क्योंकि इस समय जलप्रपात पूरी ताकत से बहता है, आसपास का क्षेत्र हरा-भरा होता है और दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। हालांकि, इस दौरान फिसलन भरे और ऊबड़-खाबड़ रास्तों के कारण सावधानी बरतनी आवश्यक है। मानसून के बाद के महीने भी शांतिपूर्ण और सौंदर्यपूर्ण अनुभव प्रदान करते हैं।

परमेश गौतम
लेखापरीक्षक

गीता सार

परिचय:

भगवद गीता, महाभारत का एक महत्वपूर्ण भाग है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद हुआ है। यह संवाद महाभारत के युद्धभूमि कुरुक्षेत्र में हुआ, जब अर्जुन अपने सगे संबंधियों के खिलाफ युद्ध करने से विचलित हो गए। तब भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें धर्म, आत्मा, कर्म, भक्ति और जीवन के उद्देश्य का गहन ज्ञान दिया। यही उपदेश भगवद गीता कहलाता है।

गीता के मुख्य उपदेश

1. आत्मा अजर और अमर है:

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि आत्मा न कभी जन्म लेती है, न मरती है। यह नाशवान शरीर बदलता रहता है, लेकिन आत्मा शाश्वत और अविनाशी है। जैसे हम पुराने वस्त्र छोड़कर नए वस्त्र धारण करते हैं, वैसे ही आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करती है।

2. निष्काम कर्म का महत्व:

गीता का सबसे प्रसिद्ध उपदेश है –

"कर्म करो, फल की चिंता मत करो।"

मनुष्य का अधिकार केवल कर्म पर है, फल पर नहीं। हमें अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से करना चाहिए, बिना परिणाम की चिंता किए।

3. धर्म का पालन और कर्तव्य:

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बताया कि एक योद्धा के रूप में उसका धर्म युद्ध करना है। चाहे सामने अपने सगे संबंधी ही क्यों न हों, धर्म और कर्तव्य से पीछे हटना पाप के बराबर है।

4. मोह और माया से मुक्ति:

मनुष्य दुखी इसलिए होता है क्योंकि वह मोह, माया, और इच्छाओं में फंसा रहता है। जब तक हम इनसे मुक्त नहीं होंगे, तब तक शांति संभव नहीं। सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए मोह त्यागना आवश्यक है।

5. भक्ति और समर्पण:

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं –

"मेरी शरण में आओ, मैं तुम्हें सभी पापों से मुक्त कर दूंगा।"

पूर्ण समर्पण और भक्ति से ही ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। जो भी मनुष्य श्रद्धा से भगवान को स्मरण करता है, वह जीवन के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

निष्कर्ष:

गीता का सार हमें सिखाता है कि जीवन एक संघर्ष है, लेकिन यदि हम अपने कर्म को ईमानदारी से करें, मोह-माया से दूर रहें और ईश्वर में आस्था रखें, तो कोई भी बाधा हमें डिगा नहीं सकती। गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है।

शुभम गौड़

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

चाचा के चार आम और हुदिया की चाल

चाचा चारपाई के नीचे वाला चार गो आम दीजिये न, कहते हुए एक 18-20 साल का लड़का हाथ में खैनी चुनाते हुए चाचा के पास पहुँचता है। आम से सुगंधित मौसम में आम की रखवाली हेतु चाचा आम के बगीचे में ही अपनी दिनचर्या बिताया करते थे और विश्राम एक खटिया पर। उसी खटिया के नीचे एक छोटा सा गढ्ढा हुआ करता था जिसमे स्वतः गिरे हुए आम इकट्ठा किये जाते थे जिसमें चाचा गछपक्कू आम को चुनचुन के रखते थे और जब कोई घर से खाना लेके आता था या चाचा घर की तरफ जाते थे तो इस आम को अपने घरवाले को दे देते थे। ऐसे गछपक्कू आम पे सबकी ललचाई निगाहें बरबस ही अटक जाती थी। उसी के बचाव में उसपे खटिया बिछी होती थी और उसी खटिए पर विश्राम स्थल भी, जिससे थोड़ी भी आहट या खटपट होने पर नींद खुल सके और स्वादिष्ट आमों की पूर्णतः सुरक्षा हो सके। चाचा भी अपने ज़माने के आम के सौदागर हुए करते थे और उनके बगीचे के आमों की बेजोड़ स्वाद की खबर उसी तरह गुंजायमान थी जैसे कोई भंवरा ने स्वाद चख के सब आस परोस को बताया हो और उसके प्रति चंचल नयन और उसकी सुरक्षा के प्रति क्रतव्यनिष्ठा। क्या मजाल की कोई एक भी आम उनके चकोर दृष्टि से ओझल हो जाए? गांव में आम लोलुप लोगों के बीच एक गजब की प्रतिस्पर्धा हुए करती थी और साथ में आम के स्वाद की चर्चायें आम नहीं खास हुआ करती थी। चर्चा में एक दूसरे को अक्सर कहा करते थे की अगर दम है तो चाचा के बगीचे का आम खा के बताओ तो जाने, पीठ पीछे डींगे हांकने से काम नहीं चलेगा। इस कठिन काम का जिम्मा गांव का ही एक हुड़दंगी बच्चे ने अपने सर पर लिया, जिसका नाम हुस्न दयाल सिंह था जिसको प्यार से सब हुदिया ही कहते। चाचा आम नहीं न दिए, ठीक है! आज रात ही की रात खटिआ के नीचे से सब आम गायब होगा और हम सब में भोग लगेगा। पूरा प्लान तैयार हुआ और प्लान के अनुसार हुदिया हाथ में खैनी चुनाते हुए चाचा के पास पंहुचा और पूछे चाचा खैनी खाओगे? चाचा बोले खैनी खाता तो हूँ लेकिन तुम्हारी मंशा कुछ ठीक नहीं लग रहा है सो आज मैं नहीं खाऊंगा।

चाचा, बगल वाले गांव के सरपंच साहब आपकी बराई करते हुए नहीं थकते हैं कहते हैं की चाचा के बगीचे की आम का स्वाद इधर के 10-12 गांव में है ही नहीं, आखिर क्यों न हो चाचा अपने आम पर मेहनत भी तो खूब करते हैं और निराई गुराई और रखवाली करना तो कोई उनसे सीखे। बात के दौर चलते चलते हुदिया बोला चाचा आपके बगीचे में कौन-कौन सा आम है ? चाचा बोले अरे यहाँ तो दूधिया मालदह ,जड़दा, जड़दालु, मल्लिका, लंगड़ा, सुकुल और भी कई सारे है। चाचा सबसे मीठा कौन सा है, चाचा बोले मालदह। हुदिया बोला खटिया के नीचे जो गड्ढा मैं रखा हुआ पीला-पीला जो है वो मालदह है क्या? चाचा बोले हाँ जी लेकिन इससे तुमको क्या लेना देना तुम उधर देख ही क्यों रहे हो? अरे चाचा दो चार खिला ही दोगे तो उससे आपका क्या बिगड़ जायेगा और कौन सा कम हो जाएगा। अरे चाचा हम भी तो बहुत दिन से इसी ताक में आते जाते रहते हैं लेकिन कभी स्वाद नहीं चख

पाए लेकिन चाचा के सामने हुदिया की एक न चली। काफी मान मनौवल्ल की बाद भी जब एक भी आम नहीं मिला तो हुदिया बोला ताऊ सुनने में

आया है रात को आम खाने भूत भी आता है कभी कभी तो दिन में ही आ जाता है कभी मुलाकात हुई है क्या? चाचा बोले नहीं रे भुत-वूत कुछ नहीं होता है। अरे चाचा बगल वाले बगीचे में पंडित काका है न उनको दिन में ही खटिया को एक तरफ उल्टा कर सारा आम भूत ले गया और उसका गुठली उन्ही की खटिया क़े बगल में फेक क़े चला गया था। घनघोर कलयुग है तब तो, चाचा बोले। इसलिए कहता हूँ थोड़ा सावधान रहिएगा और आम खाते और खिलाते रहिये, हो न हो आपके साथ भी कुछ उसी तरह की कुछ अनहोनी न हो जाये। और हां रात में सोने की वक्त थोड़ा सावधान रहिएगा और अपना ध्यान भी।

चाचा बोले, हुड़दंगी कुछ भी हो जाए तुमको तो एक भी आम नहीं दूंगा भले ही ये सारे सड़ जायें। हुदिया भी आव देखा न ताव बोला चाचा तब तो आम खाऊंगा ही और आपके सामने भी। कल तक का समय है अगर नहीं खिलाये तो अंजाम अच्छा नहीं होगा। अरे जा जा तेरे जैसे कई धुरंधर को मैंने कई बार पछाड़ा है। मन मसोच कर बेचारा हुदिया घर वापस लौट गया और शाम में सब दोस्तों क़े साथ चौक पर आज क़े चाचा क़े बेरुखी की चर्चायें सरे आम कर गया। सारे दोस्तों ने चाचा को मजा चखाने का प्लान तैयार कर लिया और बोला मजा ऐसा हो कि अगली बार से आम खिलाने क़े मद्देनजर कभी भी किसी को अनसुना न कर सके खासकर हुदिया को तो बिलकुल नहीं, आखिर हुस्न दयाल सिंह की गांव में कोई इज्जत है भी की नहीं ?

सावन क़े शुक्ल पक्ष का समय था चन्द्रमा अपनी चांदनी एक और दो घड़ी बाद पसार रही थी और प्लान भी उसी तरीके का बनाया गया। एक तो चांदनी पूर्ण हो और चाचा की नींद भी गहरी ताकि कार्य को अंजाम देने में कोई परेशानी नहीं हो और काम बिना किसी कलंक क़े कार्यान्वित हो। रात करीब 1030 बजे का समय था हुडिया अपने दल बल क़े साथ चाचा क़े बगीचे में पहुंचा, देखा तो चाचा गहरी नींद में सोये हुए हैं और आम उनके खटिया क़े नीचे खुशबू बिखेर रही थी अभी तो मकसद खाने का था ही नहीं अपितु तंग करने का था वो भी शालीनता से , सो मन मारकर ललचाने वाली आम की तरफ देखा तक नहीं। बगीचे आम क़े अलावे कई तरह क़े फलदार वृक्षों और झाड़ियों से पल्लवित था जहाँ चाचा का खटिया लगा था उसके चरों ओर बांसों की झुड़मुट भी अपनी जवानी और लचीलापन की अंगराई ले कर झूम रही थी, बस क्या था इसी लचीलापन का तो फायदा उठाना था। खटिया क़े चारों कोना को उस तरफ क़े बांस क़े फुनगी को झुकाकर बड़ी सिद्दत से चारों पौवा में बांध दिया। तथापि चाचा सोये हुए थे तो उनका भार बांस को झुकाये ही रखा। सारे दोस्त अब प्लान क़े अनुसार अब अंजाम की प्रतीक्षा में पेड़ की आड़ में मजा लूटने और भूत की आवाज़ निकालने की प्रतीक्षारत थे। चाचा को जब दो तीन आम गिरने की आवाज़ सुनाए दी "धप्प" तो नींद खुली तो सोचे, आम को चुनकर खटिया के नीचे रख देते हैं और साथ साथ लघुशंका भी कर लेते है। सोचकर ज्यों ही अपना पैर नीचे रखकर जाने को तैयार हुए त्यों ही खटिया बांस की जवानी की लचीलापन के साथ हो लिया

और गगन को चूमने को निकल पड़ा। नेपथ्य में खड़े धुरंधर पेड़ की आड़ से भूत की आवाज़ भी साथ साथ साथ निकालने लगे। ये कुदृश्य देखकर और सुनकर चाचा के प्राण सूख गए और पांव जकड़ गए सो अलग। अब न पांव

आगे बढ़ रहे और न ही घिग्घी के कारण आवाज़। इस सुनसान रात में अब किसे बुलायें और कैसे? बहुत हिम्मत करके भारी मन से थोड़ी दूर जा के लघुशंका किये और पुनः अपने आप को सांत्वना देते हुए बगल वाले बगीचे में पंडित काका के पास जाकर अपनी आप बीती सुनाई और साथ साथ डर भरी रात भी बिताई। इधर सारे उत्पाती उनका सारा आम लेकर कुछ खाये कुछ गिराए और कुछ सुबह चाचा को दिखाने के लिए रख लिए। सुबह हुई, इधर चाचा अपने बगीचे को लौटे और उधर हुदिया आम खाते हुए चाचा के बगीचे में। उनके सामने ही आम चूसते हुए बोला, पंडित काका बता रहे थे बीती रात भूत ने आपका सारा आम तो लिया ही साथ में खटिया और विछावन भी ! अब की बारी थी, धीरे धीरे आम खाते हुए चाचा के पास आंखों में एक प्रसन्नता वाली हंसी लिए हुए आया। चाचा बोले, इस आम का सुगंध तो हमरे बगीचे वाली है ये तुम्हारे पास कैसे आया। हाँ चाचा , इस स्वाद का आम तो आसपास के दस गावों में नहीं है। इसका मतलब आम मेरे बगीचे का है क्या रे ? हुदिया बोला और का ! चाचा पूछने लगे तुम्हेऽ कैसे मिला और किस पेड़ का आम है ये? तब हुड़दंगी ऊपर दिखाते हुए बोला इसी पेड़ का तो आम है। ज्यों ही हुदिया चाचा को ऊपर दिखाया , चाचा आम क्या देखते अपने खटिया का गगनचुम्बी हुआ देखकर अवाक् रह गए और आभास हुआ हो न हो ये सारा खड्यंत्र इसी हुदिया का ही हो। मन में गुस्सा और बुढ़ापे की लाठी लेकर ज्यों ही हुड़दंगी हुदिया को मारने दौड़े त्यों ही वह पैर सर पर रखकर सरपट भागा और भागते भागते बोला चाचा आम हमऽऽऽम नहीं वो वो भूऽऽऽत आया होगा। वही कुछ आम छोड़ गया था जो हमें खाने को मिला। थोड़ी दूर जा कर के हुदिया बोला वैसे कुछ भी कहिये चाचा आपके बगीचे का आम है बहुत बेजोड़, जो खाये वो पछताए जो नहीं खाये वो भी पछताए। अरे चाचा जो स्वाद आम में है उसको अगर थोड़ा प्रेम से खिलाते तो क्या कहने इसका स्वाद चार गुना हो जाता सो अलग और भूत दर्शन क़े कोपभजन से बच जाते सो अलग। इसलिए तो कहता हूँ खाते रहिये खिलाते रहिये सब से प्रेम से गपियाते रहिये,

"न जाने किस रूप में नारायण मिल जायें"।

****

राम राघव

लेखापरीक्षक

"बदलते नज़रिये से जीवन"

कल जो राहें कठिन लगती थीं,
आज वही अनुभव बन जाती हैं।
कल जो आँसू भारी लगते थे,
आज वही मोती समझ में आते हैं।

बचपन की आँखों से दुनिया रंगों का खेल थी,
हर चीज़ में चमत्कार था।
जवानी में वही दुनिया एक दौड़ बन गई
हर कोई मंज़िल से आगे निकलने की होड़ में।
और अब समझ आता है—
मंज़िल कहीं बाहर नहीं,
यात्रा के हर मोड़ पर बसी हुई थी।

समय हमें सिखाता है कि दुःख और सुख,
दोनों ही स्थायी नहीं हैं।

कल जिस हार पर मन टूटा था,
आज वही हार अनुभव का दीपक जलाती है।
कल जिस सफलता पर गर्व था,
आज वही स्मृति विनम्रता का पाठ पढ़ाती है।

नज़रिए बदलते हैं तो
वही परिस्थितियाँ नई लगने लगती हैं।
जहाँ कभी अंधेरा था,
अब वहीं समझ की रौशनी है।
जहाँ कभी प्रश्न थे,
अब वहीं उत्तर धीरे-धीरे उभर रहे हैं।

समय के साथ दृष्टि बदलना ही जीवन का सार है।
क्योंकि दुनिया हमेशा वैसी ही रहती है—
पर जो बदलता है,
वो है हमारा देखना, हमारा समझना, हमारा होना।

अनुज्ञा गुप्ता
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

आज की नारी!

ये आज की नारी है
ना अबला ना बेचारी है,
ये आज की नारी है
जो सब पे भरी है,

देवी का अवतार यही है
उन्नति का प्रसार यही है,
इनको ना कमजोर तुम समझो
शक्ति स्रोत का सार यही है,

जब भी लड़ने की इसने ठानी है
महिला बनी मर्दानी है,
ना अबला ना बेचारी है,
ये आज की नारी है,

एक अवसर दो इनको बढ़ने का
कदम से कदम मिलाएगी ये,
एक स्त्री को तुम शिक्षित करो
पूरी पीढ़ी शिक्षित कर जायेगी ये,

नारी की अस्तित्व जगत में सबसे शक्तिशाली है
धरती पर रहकर भी ये आसमान पर भारी है,
इनके होने से ही चलती ये दुनिया सारी है
ईश्वर भी खुद हाथ जोड़कर इनके आभारी हैं,

ये आज की नारी है!

विनोद कुमार मीना
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

गोकर्ण और मुरुदेश्वर की यात्रा

कुछ समय पहले मुझे कर्नाटक के प्रसिद्ध धार्मिक और पर्यटन स्थलों गोकर्ण और मुरुदेश्वर जाने का अवसर मिला। यह यात्रा मेरे लिए केवल एक साधारण भ्रमण नहीं, बल्कि एक ऐसा अनुभव था, जिसने मेरे मन को शांति, श्रद्धा और आनंद से भर दिया।

सबसे पहले मैं गोकर्ण पहुँचा। इसे **"दक्षिण का वाराणसी"** कहा जाता है क्योंकि यहाँ भगवान शिव का प्राचीन **महाबलेश्वर मंदिर** स्थित है। इस मंदिर में आत्मलिंग की पूजा होती है, जिसकी मान्यता बहुत प्राचीन और धार्मिक ग्रंथों से जुड़ी हुई है। मंदिर में दर्शन के समय भक्तों की आस्था और भक्ति को देखकर मन अत्यंत भावुक हो उठा। इसके अलावा गोकर्ण अपने शांत और सुंदर समुद्र तटों के लिए भी प्रसिद्ध है। मैंने ओम बीच और कुडले बीच का आनंद लिया। इन तटों की स्वच्छता, लहरों की गूँज और प्रकृति का अनोखा सन्नाटा मेरे हृदय को गहराई से छू गया।समुद्र किनारे बैठकर सूर्यास्त देखना मेरे लिए अविस्मरणीय अनुभव रहा।

गोकर्ण से आगे मेरी यात्रा मुरुदेश्वर की ओर हुई। यह स्थान भगवान शिव की **123 फीट ऊँची भव्य प्रतिमा** के लिए विश्वभर में जाना जाता है। जब मैंने समुद्र के किनारे पहाड़ी पर स्थित इस प्रतिमा को देखा, तो मन श्रद्धा और विस्मय से भर गया। मंदिर का वातावरण अत्यंत दिव्य था। समुद्र की लहरें जब मंदिर की सीढ़ियों से टकराती थीं, तो लगता था मानो पूरा वातावरण भगवान शिव के नाम में गुंजायमान हो गया हो। मंदिर से समुद्र का चारों ओर का दृश्य सचमुच मनमोहक था।

मुरुदेश्वर में कुछ समय समुद्र तट पर बैठकर मैंने लहरों की आवाज़ और ठंडी हवा का आनंद लिया। वहाँ का वातावरण इतना शांत और सुकून भरा था कि समय कब बीत गया, पता ही नहीं चला।

गोकर्ण और मुरुदेश्वर की यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक रही। इस यात्रा ने मुझे न केवल धार्मिक आस्था और भक्ति से जोड़ा, बल्कि प्रकृति की अद्भुत सुंदरता का अनुभव भी कराया। यह स्थान हर उस यात्री के लिए विशेष हैं, जो आध्यात्मिकता और प्राकृतिक सौंदर्य दोनों का आनंद लेना चाहता है।

अभिनव कुमार गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

डिजिटल युग में स्क्रीन का अति-उपयोग : एक बढ़ती सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती

आज के समय में मोबाइल फोन, कंप्यूटर, टैबलेट और टेलीविज़न हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। चाहे शिक्षा हो, कार्यस्थल हो या मनोरंजन—हर जगह स्क्रीन का प्रभुत्व दिखाई देता है। यद्यपि डिजिटल साधनों ने सीखने, जुड़ाव और उत्पादकता को बढ़ाया है, लेकिन विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों, जिनमें नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन्स, भारत के निष्कर्ष भी शामिल हैं, यह दर्शाते हैं कि स्क्रीन का अत्यधिक उपयोग हमारे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर डालता है।

सबसे पहले, **संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली** पर इसका प्रतिकूल प्रभाव देखा गया है। बच्चों में अधिक स्क्रीन टाइम कार्यकारी क्षमता को कमजोर करता है, वहीं वयस्कों में यह ध्यान की कमी, मल्टीटास्किंग की क्षमता में गिरावट और उत्पादकता में कमी का कारण बन सकता है। लगातार स्क्रीन देखने से नींद की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है, जिससे दीर्घकालिक थकान और मानसिक असंतुलन बढ़ सकता है।

भाषाई और सामाजिक विकास के संदर्भ में, बच्चों के साथ-साथ वयस्कों में भी स्क्रीन का अत्यधिक उपयोग मानवीय संवाद को सीमित करता है। इससे न केवल भाषा और संवाद कौशल कमजोर होते हैं बल्कि पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों में भी दूरी बढ़ने लगती है। पृष्ठभूमि में लगातार टीवी या मोबाइल का उपयोग ध्यान भटकाता है और गुणवत्तापूर्ण संवाद में बाधा डालता है।

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी इसके गहरे दुष्प्रभाव देखे गए हैं। लंबे समय तक स्क्रीन देखने की आदत मोटापा, पीठ व गर्दन दर्द, आँखों की समस्याएँ और नींद से संबंधित विकारों को जन्म देती है। मानसिक स्तर पर यह अवसाद, चिंता, चिड़चिड़ापन और सामाजिक अलगाव जैसी स्थितियों से जुड़ी हुई है। विशेष रूप से सोशल मीडिया का अति-उपयोग आत्मसम्मान को प्रभावित करता है और तुलना की भावना को बढ़ावा देता है।

इस चुनौती से निपटने में **स्वनियंत्रण और पारिवारिक भूमिका** अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि छोटे बच्चों के लिए स्क्रीन टाइम प्रतिदिन एक घंटे से अधिक न हो और किशोरों व वयस्कों के लिए इसे दो घंटे

तक सीमित रखना बेहतर है। स्क्रीन का उपयोग कार्य और आवश्यक कार्यकलापों तक सीमित करना, सोने से पहले स्क्रीन से दूरी बनाना और परिवार के साथ "नो-स्क्रीन टाइम" तय करना लाभकारी हो सकता है।

अतः यह निष्कर्ष स्पष्ट है कि डिजिटल साधन हमारी प्रगति के लिए आवश्यक हैं, लेकिन इनका संतुलित और नियंत्रित उपयोग ही हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन के लिए सुरक्षित और लाभकारी है।

राजकिरण पुडकलकट्टी,
डी. ई. ओ. (बाह्य स्रोत)

योग और ध्यान: तनावमुक्त जीवन की कुंजी

आज की तेज़-रफ़्तार ज़िंदगी में तनाव हर इंसान का हिस्सा बन गया है। पढ़ाई के दबाव से जूझते विद्यार्थी हों या समय-सीमा में उलझे कर्मचारी—लगभग हर कोई चिंता, बेचैनी और थकान से परेशान है। ऐसे समय में योग और ध्यान प्राकृतिक उपाय के रूप में मन को शांत करने और संतुलन लौटाने में मदद करते हैं।

योग की शक्ति

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है। आसनों (postures) का अभ्यास लचीलेपन को बढ़ाता है, ऊर्जा को बढ़ाता है और शारीरिक तनाव को कम करता है। **शवासन**, **बालासन**, और **प्राणायाम** जैसे आसन विशेष रूप से तनाव घटाने और मन को शांति देने में प्रभावी हैं।

ध्यान के लाभ

ध्यान मन को केंद्रित करने और आंतरिक शांति पाने की कला है। रोज़ाना केवल 10–15 मिनट ध्यान करने से:

- तनाव के हार्मोन कम होते हैं
- एकाग्रता में सुधार होता है
- भावनात्मक स्थिरता आती है
- गहरी और सुकूनभरी नींद मिलती है

ध्यान हमें वर्तमान में जीना सिखाता है और अतीत की चिंताओं तथा भविष्य की आशंकाओं से मुक्त करता है।

आंतरिक संतुलन की राह

जब योग और ध्यान को साथ में किया जाता है, तो वे न केवल शरीर को मजबूत करते हैं, बल्कि मन को भी स्वस्थ बनाते हैं। यह साधना जीवन की चुनौतियों का शांतिपूर्वक सामना करने में मदद करती है और दीर्घकाल में सकारात्मकता, आत्म-जागरूकता और मानसिक संतुलन लाती है।

निष्कर्ष

तकनीक और भागदौड़ के इस युग में योग और ध्यान हमें ज़मीन से जोड़े रखते हैं। वे याद दिलाते हैं कि असली सुख हमारे भीतर ही है और यदि हम नियमित अभ्यास करें तो तनावमुक्त जीवन पूरी तरह संभव है।

उदयकुमार बी मनकट्टी
लेखापरीक्षक

तुलसीदास : जीवन और कृतित्व

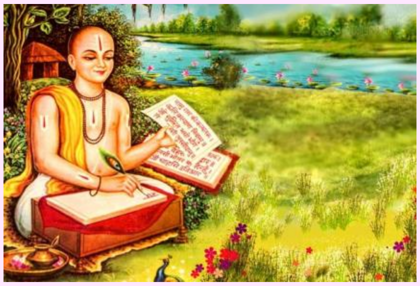

भारतीय साहित्य और संस्कृति के इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास का नाम अमर है। वे भक्ति आंदोलन के महान संत, कवि और रामभक्त के रूप में जाने जाते हैं। तुलसीदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को भक्ति, धर्म, नैतिकता और मानवता का सन्देश दिया।

तुलसीदास जी का जन्म सन् 1532 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के राजापुर नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी देवी था। जन्म के समय ही उनका जीवन संघर्षमय हो गया था। जन्म के कुछ दिनों बाद ही उनकी माता का निधन हो गया और पिता ने भी त्याग कर दिया। बाल्यावस्था में उन्हें बहुत कष्ट झेलने पड़े।

तुलसीदास का पालन-पोषण एक दासी ने किया। किंतु प्रारम्भिक जीवन में उन्हें अनेक कठिनाइयों और उपेक्षा का सामना करना पड़ा। कहा जाता है कि वे बचपन से ही श्रीराम नाम का उच्चारण करने लगते थे। युवा अवस्था में उन्होंने विद्याध्ययन किया और संस्कृत, हिंदी तथा वेद–पुराणों का गहन अध्ययन किया।

तुलसी दास की रचनाएँ भारतीय साहित्य में अद्वितीय स्थान रखती हैं। तुलसीदास की प्रमुख रचना **'रामचरितमानस'** है, जिसे अवधी भाषा में लिखा गया। इसमें श्रीराम के आदर्श जीवन और मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप का वर्णन है। यह ग्रंथ आज भी प्रत्येक हिंदू परिवार में पूजनीय और गाया जाने वाला ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका, हनुमान चालीसा, दोहावली, जानकीमंगल आदि अनेक रचनाएँ कीं। विशेष रूप से ***हनुमान चालीसा*** आज भी भारत के कोने-कोने में श्रद्धा और विश्वास के साथ पढ़ी जाती है।

तुलसीदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में भक्ति, सदाचार और भाईचारे का संदेश दिया। उस समय समाज जाति-पाँति और भेदभाव में बँटा हुआ था। तुलसीदास ने अपने काव्य द्वारा लोगों को यह समझाया कि ईश्वर की भक्ति में जाति, वर्ण, धन या प्रतिष्ठा का कोई स्थान नहीं है। उनके अनुसार भगवान की कृपा पाने के लिए केवल सच्ची श्रद्धा और भक्ति की आवश्यकता है।

तुलसीदास का जीवन सादगी, त्याग और भक्ति का आदर्श था। उन्होंने अपनी लेखनी से भारत की सांस्कृतिक धारा को समृद्ध किया। आज भी उनके विचार और कृतियाँ लोगों को प्रेरित करती हैं।

सन् 1623 ईस्वी में वाराणसी में तुलसीदास का देहावसान हुआ। परंतु उनके द्वारा लिखी गई रचनाएँ और उनका संदेश आज भी अमर है। तुलसीदास केवल एक कवि या संत नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के मार्गदर्शक थे। उन्होंने समाज को रामभक्ति का सरल और सुगम मार्ग दिखाया। उनके साहित्य में भक्ति के साथ-साथ जीवन जीने की शिक्षा भी निहित है। इस प्रकार तुलसीदास सदैव भारतीय समाज और संस्कृति में श्रद्धा और सम्मान के साथ स्मरण किए जाते रहेंगे।

संग्रहीत,

पम्पा बिस्वास

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, दक्षिण पश्चिम रेलवे, हुब्बल्लि - 580023
CELEBRATION
SEPTEMBER 2025

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT SOUTH WESTERN RAILW
08-22 SEPTEMBER 2025

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT SOUTH WESTERN RAILWAY, HUBBALLI
FORTNIGHT CELEBRATION
2024 / 09-23 SEPTEMBER 2024

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
2024 / 09-23 SEPTEMBER 2024

HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, दक्षिण पश्चिम रेलवे, हुब्बल्लि - 580023
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT SOUTH WESTERN RAILWAY, HUBBA
दी पखवाड़ा समारोह
FORTNIGHT CELEBRATION
2024 / 09-23 SEPTEMBER 2024

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT SOUTH WESTERN RAILWAY, HU
हिन्दी पखवाड़ा समारोह
FORTNIGHT CELEBRATION
सितंबर 2024 / 09-23 SEPTEMBER 2024

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF IND
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, दक्षिण पश्चिम रेलवे, हुब्बल्लि - 5800
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT SOUTH WESTERN RAILWAY, HU
हिन्दी पखवाड़ा समारोह
FORTNIGHT CELEBRATION
सितंबर 2024 / 09-23 SEPTEMBER 2024

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF IN
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT SOUTH WESTERN RAILWAY, HU
हिन्दी पखवाड़ा समारोह
FORTNIGHT CELEBRATION
सितंबर 2024 / 09-23 SEPTEMBER 2024

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT SOUTH WESTERN RAILWAY, HU
हिन्दी पखवाड़ा समारोह
FORTNIGHT CELEBRATION
सितंबर 2024 / 09-23 SEPTEMBER 2024

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
ಹಿಂದಿ ಪಾಕ್ಷಿಕ ಆಚರಣೆ
हिन्दी पखवाड़ा समारोह
FORTNIGHT CELEBRATION
09-23 SEPTEMBER 2024

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
ಹಿಂದಿ ಪಾಕ್ಷಿಕ ಆಚರಣೆ
हिन्दी पखवाड़ा समारोह
FORTNIGHT CELEBRATION
सितंबर 2024 / 09-23 SEPTEMBER 2024

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, दक्षिण पश्चिम रेलवे, हुब्बल्लि - 580023
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT SOUTH WESTERN RAILWAY, HUBBA
ಹಿಂದಿ ಪಾಕ್ಷಿಕ ಆಚರಣೆ
हिन्दी पखवाड़ा समारोह
FORTNIGHT CELEBRATION
23 सितंबर 2024 / 09-23 SEPTEMBER 2024

ಹಿಂದಿ ಪಾಕ್ಷಿಕ ಆಚರಣೆ
हिन्दी पखवाड़ा समारोह
सितंबर 2024 / 09-23 SEPTEMBER 2024

ಹಿಂದಿ ಪಾಕ್ಷಿಕ ಆಚರಣೆ

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली 580023 (कर्नाटक)